

बाग-दान BAAG-UAN

वार्षिक पत्रिका 2021-22



उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय
झालावाड़
(कृषि विश्वविद्यालय, कोटा)





डॉ. ए. के. व्यास
कुलपति

कृषि विश्वविद्यालय, कोटा
Agriculture University, Kota
बोरखेड़ा, बारां रोड़, कोटा 324001 (राज.)
Borkhera, Baran Road, Kota 324001 (Raj.)



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़ वार्षिक पत्रिका बाग-वन के वर्ष 2022 का संस्करण प्रकाशित कर रहा है। महाविद्यालय की यह पत्रिका विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के लिए अपने विचारों एवं अपनी लेखन कला को प्रस्तुत करने के लिए एक अच्छा माध्यम है। जिसके द्वारा सभी लेखकों ने वर्तमान चुनौतियों एवं स्वज्ञान को रचनात्मक लेख के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस पत्रिका में देश के विकास में युवाओं की भागीदारी, समय के महत्व, किसानों की वास्तविक स्थिति एवं पर्यावरण जैसे विशयों को सरल एवं सारगर्भित लेखन से लिखा गया है यह प्रशंसनीय है।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए रचनात्मक एवं शिक्षाप्रद होगी। मैं महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आई. बी. मौर्य और संपादकीय समिति के सदस्यों को इस प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ एवं बाग-वन की सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

स्थान : कोटा
दिनांक : 11.05.2023


(ए. के. व्यास)
कुलपति



Dr. I.B. Maurya
DEAN

College of Horticulture & Forestry Jhalawar

(Agriculture University Kota)

Post office , Jhalrapatan- 326023
Jhalawar, Rajasthan



Ph- 07432 -241155
chf@aukota.org

प्राक्कथन

उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़ की वार्षिक पत्रिका बाग-वन के वर्ष 2022 के अंक प्रकाशन पर मैं बहुत उत्साहित महसूस कर रहा हूँ। यह पत्रिका महाविद्यालय के विद्यार्थियों को अपने अन्तर्निहित प्रतिभा एवं उनकी रचनात्मक सोच को समाज के सामने प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करती है। महाविद्यालय के छात्रों एवं कर्मचारियों ने वर्तमान के सामाजिक विषयों को इस पत्रिका में अपने लेख के द्वारा प्रस्तुत करने का अच्छा प्रयास किया है। जिससे पाठकों को सम्बंधित विषय का अधिक से अधिक ज्ञान संक्षिप्त रचनात्मक लेख के द्वारा मिल सके। यह पत्रिका वर्तमान चुनौतियों से सम्बंधित जानकारी के लिए गागर में सागर साबित होगी।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन दायक होगी। मैं मुख्य संपादक डॉ. एस. बी. एस. पाण्डेय और उनके समूह को महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका बाग-वन के इस अंक को सृजित करने के उनके प्रयासों के लिए बधाई देता हूँ।

अधिष्ठाता

उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़



डॉ. जितेन्द्र सिंह
निदेशक छात्र कल्याण

DIRECTORATE OF STUDENTS' WELFARE

AGRICULTURE UNIVERSITY, KOTA

CAMPUS: COLLEGE OF HORTICULTURE &
FORESTRY, JHALRAPATAN, JHALAWAR-326 023 (RAJASTHAN)



छात्र कल्याण निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

परिसर: उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय

झालरापाटन, झालावाड़, 326 023 (राजस्थान)

Phone: 07432-241155(O) ; FAX No. : 242155,

Mob. :9950315761, Email dswaukota2018@gmail.com

दिनांक: २७.०४.२०२३

संदेश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता है कि उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़ अपनी अकादमिक सुयश "बाग-वन" के रूप में प्रकाशित कर रहा है। बाग-वन में महाविद्यालय के शिक्षकगण एवं विद्यार्थीगण की सृजन परक एवं मानवतापयोगी मणिकों को समावेशित किया गया है जो निश्चय ही कृषि संसार के लिए सुरभिकारक है। पत्रिका में लेखकों ने अपनी कलम-कुँची से विषय-वस्तु को करीने से संजोया है, जो इसकी पठनीयता को प्राणपन देगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

मैं उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय के मुखिया समेत पूरी मण्डली को साधुवाद देता हूँ कि जिनके श्रम जल से "बाग-वन" पठनीय प्रस्तुति के रूप में हस्तगत होगी। "बाग-वन" एक वैशिष्ट्यमय पत्रिका का रूप ले, मैं एतदर्थ शुभाशीष संप्रेषित करता हूँ।

जितेन्द्र सिंह

निदेशक, छात्र कल्याण,
कृषि विश्वविद्यालय, कोटा

प्रधान सम्पादक की कलम से.....



असित गिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे
सुरतरुवर-शाखा लेखनी पत्र मुर्वी
लिखति यदि गृहीत्वा शारदां सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

हे भगवान ? यदि काले पर्वत की स्याही समुद्र रूपी पात्र में घोलकर सारे वृक्षों की शाखाओं की लेखनी बनाकर यदि सरस्वती हर समय आपके गुणों को लिखती रहें तो भी आपके गुणों का पार नहीं पाया जा सकता।

विद्यार्थी जीवन के उल्लास एवं कर्तव्य परायणता के संगम स्वरूप ही महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका बाग-वन के इस अंक की सार्थकता सिद्ध होती है। हमारे विद्यार्थियों ने पठन-पाठन एवं अपनी कृतियों को पत्रिका के प्रकाशन के लिए समयबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया है। पत्रिका के इस अंक में महाविद्यालय के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का सार्थक योगदान एवं अधिष्ठाता का हार्दिक सहयोग प्राप्त होने के साथ ही प्रत्येक स्तर पर सकारात्मक सम्बल प्राप्त हुआ है।

भारत देश की एकता में अनेकता का वैश्विक परिदृश्य जग-जाहिर है इसी क्रम में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों की स्वरचित कवितायें, प्रेरक प्रसंगों एवं उपयोगी लेखों से ओत-प्रोत यह पत्रिका निश्चय ही महाविद्यालय के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित होगी। विद्यार्थी जीवन के वैचारिक स्तर एवं दिवास्वप्नों को राष्ट्रहित के लिए उन्नति के शिखर पर ले जाना आज के युग की पुनीत आवश्यकता है। किसी ने सच ही कहा है।

मुश्किल नहीं है कुछ दुनिया में,
तू जरा हिम्मत तो कर,
ख्वाब बदलेंगे हकीकत में,
तू जरा कोशिश तो कर।।

पत्रिका की सम्पादन समिति ने आलेखों के बिखरे हुए मोतियों को एक सूत्र में पिरोने का उत्कृष्ट कार्य किया है। आशा है, यह पाठकों को ज्ञान के परिमार्जन से हृदयाविभूत करेगी। बाग-वन पत्रिका को भविष्य में नव सृजन, मौलिकता एवं वितृत स्वरूप में प्रस्तुत करने के लिए हम तत्पर रहेंगे। हमारी ऐसी भावना है कि पाठकगण हमारे प्रयासों को अपनी प्रतिक्रियाओं एवं संवेदनाओं द्वारा समय-समय पर अवगत कराते रहेंगे।



प्रधान सम्पादक



सम्पादक समिति



Dr. I.B. Maurya
Patron



Dr. S.B.S. Pandey
Chief Editor



Dr. Prerak Bhatnagar
Editor



Dr. Hemraj Chhipa
Editor

Office Bearer of Student Union

College Student Union CH&F, Jhalawar



Roshan Dhakar
President



Sunita
General Secretary



Nitesh Kumar Mittal
Joint Secretary



Banwari Lal Yadav
President



Naveen Kumar Dewat
Joint Secretary

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	COLLEGE AT A GLANCE		1-2
2.	घर आंगन में बिखरे पोषण के स्रोत	डॉ. प्रेरक भटनागर	3
3.	तितलियों का महत्व	डॉ. आंचल शर्मा और डॉ. कनिका उपाध्याय	4
4.	सपनों में रख आस्था	सोनाली गहलोत	5
5.	किसान	संदीप जीनागल	5
6.	मृदा की संपोषणीय व्यवस्था में सूक्ष्मजीवों की उपयोगिता	हेमराज छीपा, अनिल कुमार गुप्ता, राहुल चोपड़ा एवं अशोक कुमार	6
7.	उस समय की बात	भुमिका चन्दचोरिया	7
8.	समाज में युवाओं की भागीदारी	प्रकाश कुमावत	8
9.	MAKE IT GREEN	Kirti Jangir	9
10.	समय की महत्ता	अनिल डेवाल	10-11
11.	THE ELECTRICO	Punit Kumar Gupta	12-14
12.	WOMAN	Pankaj Badhaliya	15
13.	College Life	Pankaj Badhaliya	16
14.	मेरा बचपन	नेहा तेतरवाल	17
15.	आँख की खिड़कियाँ	राजदीप कानव	18
16.	चाहते	पंकज	18
17.	आज का किसान	अशोक कुमार	19
18.	हे कृषक	अलका कुमावत	19
19.	फॉरेस्ट और मैं	नीशा कुमारी	20
20.	जामुन के औषधीय गुण, महत्व और उपयोग	मोनिका कुमारी मीना अनिल कुमार यादव	21-22
21.	पहचान	संदीप जिनागल	22
22.	नीम है एक वरदान	योगेन्द्र कुमार शर्मा, हेमराज छीपा, राजपाल वर्मा एवं राम राज कड़वासरा	23
23.	महाविद्यालय के बगीचे के फल	डॉ. जितेन्द्र सिंह, डॉ. प्रेरक भटनागर, श्री लाधूराम एवं योगेन्द्र कुमार शर्मा	24-25
24.	Photo Gallery		26-34

College at a Glance

The College of Horticulture and Forestry, Jhalawar was established in 2004. It had been earlier the 6th constituent college of Maharana Pratap University of Agriculture and Technology (MPUAT), Udaipur. Further, consequent upon the bifurcation of MPUAT, Udaipur, Agriculture University, Kota came into existence through promulgation of Act No. 22/2013 of Govt. of Rajasthan, Jaipur during September, 2013 and since then, it is the 1st constituent college of the University.

The college is offering specialized under- graduate, post graduate and Doctoral degrees in Horticulture and Forestry. The teaching, research and extension education programmers of the college are fully interwoven. The college operates through two separate faculties namely:

- Horticulture
- Forestry

At present, there are 12 different departments fully operational as listed below:

- Department of Fruit Science
- Department of Vegetable Science
- Department of Floriculture and Landscape Architecture
- Department of Post-Harvest Technology
- Department of Silviculture and Agroforestry
- Department of Forest Biology and Tree Improvement
- Department of Forest Products and Utilization
- Department of Wildlife Management
- Department of Basic Science
- Department of Natural Resource Management
- Department of Plant Protection
- Department of Social Science

The college is located near the historical city Jhalarapatan on the Nimoda Road towards Thermal Power plant. The campus is spread over an area of 120 ha comprising of administrative building, various departments, hostels and instructional farms.

The establishment of the College of Horticulture and Forestry was an important milestone in the history of Jhalawar. It has exalted into a premier institution for Horticulture and Forestry and stands a monument academia in the field of horticulture & forestry that has been inscribed esteem from all corners of the country.

Intake capacity of students:

S.No.	Degree programme	JET/Pre-PG	ICAR	Total
1.	B.Sc. (Hons.) Horticulture	55	10	65
2.	B.Sc. (Hons.) Forestry	55	10	65
3.	M. Sc. Horticulture			
i.	Fruit Science	04	01	05
ii.	Vegetable Science	04	01	05
iii.	Floriculture and Landscape Architecture	02	01	03
iv.	Post-Harvest Technology	00	-	00
4.	M. Sc. Forestry			
i.	Silviculture & Agroforestry	05	-	05
ii.	Forest Products & Utilization	05	-	05
iii.	Forest Biology & Tree Improvement	02	-	02
iv.	Wildlife Sciences	02	-	02
5.	Ph. D. Fruit Science	03	-	03
6.	Ph. D. (Forestry) Silviculture & Agroforestry	02	-	02



घर आंगन में बिखरे पोषण के स्रोत

डॉ. प्रेरक भटनागर
सह-प्राध्यापक, फल विज्ञान विभाग

मानव जीवन में स्वस्थ और निरोगी रहने के लिए हमें अनाज, सब्जी, दालों के सेवन के साथ फलों का उपयोग करना भी आवश्यक है। वास्तव में देखे तो हमारा परिवेश बहुत से औषधीय एवं पोषक तत्वों से भरपूर फल पारिस्थितिकी में आस-पास उपलब्ध है। पोषण सिर्फ महंगे और आयातित फलों से ही नहीं, अपने आस-पास घर-आंगन, दुआरे उगने वाले पौधों पर लगने वाले फलों से भी मिलता है। हमारे आस-पास पाये जाने वाले मौसमी फल पोषक तत्वों से भरपूर पर्याप्त भंडार है।

- 1. अमरूद :** अमरूद में ऊर्जा, वसा, प्रोटीन, विटामिन ए., सी., के. ई. बी-6, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटेशियम, सोडियम, कॉपर आदि तत्व पाये जाते हैं। यह उनके लिए फायदेमन्द है जो लोग प्रोटीन, विटामिन ओर फाइबर के स्वयं से समझौते किए बिना ही वजन कम करना चाहते हैं। अमरूद में अन्य फलों की तुलना में शुगर कम होती है।
- 2. पपीता :** पपीता में पानी की मात्रा 89.6 प्रतिशत होती है। जबकि प्रोटीन 0.5 प्रतिशत, वसा 0.1 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 9.0 प्रतिशत, क्षार तत्व 0.1 प्रतिशत, कैल्शियम 0.1 प्रतिशत, फास्फोरस 0.01 प्रतिशत, लौह तत्व 0.4 मि.ग्रा/100 ग्राम तथा विटामिन ए भरपूर मात्रा में पाया जाता है।
- 3. अनार :** एक अनार में 7 ग्राम फाइबर, 3 ग्राम प्रोटीन, 30 प्रतिशत विटामिन सी., 16 प्रतिशत फोलेट, 12 प्रतिशत पोटेशियम, 42 ग्राम शर्करा और 144 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। इसमें विटामिन सी. प्रचुर होता है। बारिश में खासी, जुकाम होने पर भी हम इसे खा सकते हैं। यह शरीर को मजबूती देता है तथा ब्लड प्रेशर से लेकर याददाश्त तक दुरस्त रखता है।
- 4. केला :** पोषक तत्वों का भण्डार कहे जाने वाले स्वादिष्ट केले में विटामिन सी., फाइबर, आयरन, विटामिन बी-6, मैग्नीशियम, पोटेशियम, कॉपर, मैग्नीज आदि तत्व पाये जाते हैं। केले का सेवन करने से पेट लंबे समय तक भरा महसूस होता है। मधुमेह के रोगी इसके सेवन से बचे।
- 5. नींबू :** नींबू में पोटेशियम, लोहा, सोडियम, मैग्नीशियम, तांबा, फास्फोरस और क्लोरिन तो हैं ही, विटामिन सी. प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। यह एन्टी ऑक्सीडेंट नींबू प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है तथा कोलेस्ट्रॉल कम करता है। यह एंटी कैंसर, एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटी माइक्रोबियल भी है। शरीर से विभिन्न विषाक्त पदार्थ निकालता है तथा पानी की कमी पूरा करता है।
- 6. तरबुज :** तरबुज में विटामिन ए., बी., सी. तथा लोहा प्रचुर मात्रा में मिलता है। इससे रक्त शुद्ध होता है। रक्त परिसंचरण तेज करता है तथा मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। त्वचा को भीतरी पोषण प्रदान करके नरम, चमकदार और स्वस्थ बनाता है।
- 7. सेब :** रोज एक सेब डॉक्टर को दूर रखता है। इसमें पानी, ऊर्जा, प्रोटीन, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, लोहा, शुगर, मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटेशियम, सोडियम, जिंक, विटामिन ए., सी. के. ई. पाये जाते हैं। यह एंटी ऑक्सीडेंट है। हृदय व मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, सुजन कम करता है।
- 8. टमाटर, खीरा, ककड़ी भी फल :** फल समूह के कई सदस्य ऐसे हैं, जिन्हें आप फल नहीं समझते हैं। टमाटर, खीरा, ककड़ी आदि कई फल हैं जिन्हें आप फल समूह में न रखकर सब्जी समझते हैं, जबकि वास्तविकता में ये पोषक तत्वों से भरपूर फल है।



तितलियों का महत्व

डॉ. आंचल शर्मा और डॉ. कनिका उपाध्याय
सहायक आचार्य, उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़

तितलियाँ लेपिडोप्टेरा (स्कैली पंखों वाले कीड़े) के ऑर्डर के अंदर आती हैं। इनमें पतंगे (हेटेरोसेरा) और तितलियाँ (रोपालोसेरा) शामिल हैं, जिनमें से 17,000-20,000 टैक्सा तितलियाँ हैं। तितलियों का विकास कब हुआ इसका कोई सटीक अनुमान नहीं है। सबसे पुराना जीवाश्म 48 मिलियन वर्ष पुराना है। विभिन्न सिद्धांतों ने तितलियों की शुरुआत 50 मिलियन और 170 मिलियन वर्षों के बीच रखी। जैसा कि कोई सटीक अनुमान नहीं है, उनके विकास की अवधि को अक्सर ऑक्वर्ड एज कहा जाता है।

तितलियाँ जैव विविधता के महत्वपूर्ण घटक हैं, और वन पारिस्थितिकी तंत्र की खाद्य श्रृंखला में उनकी भूमिका के कारण पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। उनके अंडे, लार्वा (कैटरपिलर), और वयस्क (तितलियाँ) कई अन्य आर्थ्रोपोड्स, पक्षियों और सरीसृपों का भोजन बनाते हैं। अधिकांश तितलियाँ फूलों के पौधों के परागणकर्ता हैं। पौधों की विविधता के साथ उनका सहजीवी संबंध है क्योंकि वे लार्वा खाद्य पदार्थों के लिए विभिन्न प्रकार के पौधों पर निर्भर हैं। तितलियाँ पर्यावरणीय भिन्नता और गुणवत्ता की अच्छी जैविक संकेतक हैं। दैनिक और विशिष्ट रूप से आकर्षक होने के कारण, वे आसानी से धूप में इधर-उधर उड़ते हुए देखे जा सकते हैं। अन्य अकशेरुकीय की तुलना में, वे एक आसानी से पहचाने जाने योग्य समूह भी हैं जिनका व्यापक रूप से अध्ययन किया जाता है और अधिकांश प्रजातियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। उनका जीवनकाल कम होता है, वे व्यापक होते हैं, और सभी प्रकार के आवासों में पाए जाते हैं। वे अपनी आदतों और इसकी जलवायु में किसी भी अनुप्रास के प्रति संवेदनशील होने और सीधे प्रभावित होने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। तितलियाँ कटिबंधों के साथ-साथ समशीतोष्ण क्षेत्रों में संरक्षण मूल्य के संकेतक के रूप में उनके उपयोग के लिए प्रमुख उम्मीदवार हैं, क्योंकि पारिस्थितिक निशानों और सूक्ष्म जीवों के व्यापक स्पेक्ट्रम के साथ बातचीत होती है। तितलियों का उपयोग पर्यावरणीय भिन्नता के संकेतक के रूप में किया जा रहा है, क्योंकि कुछ प्रजातियों में सटीक और प्रतिबंधित पर्यावरण विभाग हैं जो पारिस्थितिक स्थितियों के एक विशेष सूट को दर्शाते हैं या पर्यावरणीय परिवर्तनों के व्यापक प्रभावों का संकेत देते हैं। उनके वितरण और बहुतायत में एक उल्लेखनीय परिवर्तन स्थानीय या व्यापक भौगोलिक पैमाने पर चिंता की आवश्यकता की प्रारंभिक चेतावनी हो सकती है।



तितलियों में मानव जाति का महान सौंदर्य मूल्य भी है। उनके आकार, रंग और पैटर्न ने हमेशा मनुष्यों को मोहित किया है और कला में मनाया जाता है। कटिबंधों के साथ स्थित कई देशों में तितलियों का व्यावसायिक मूल्य महसूस किया गया है। उदाहरण— ऑस्ट्रेलिया और यूएसए में, कुछ प्रजातियाँ बड़ी संख्या में मांग में पाले जाते हैं और शादियों जैसे विशेष अवसरों के दौरान एक उद्योग का हिस्सा बनते हैं। पापुआ न्यू गिनी में तितली खेती, पशुपालन, और तितली स्मृति चिन्ह के लिए प्रजनन स्थानीय आजीविका का हिस्सा हैं। उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण क्षेत्रों में कई देशों में अब तितली पार्को, उद्यानों, संरक्षिकाओं और ट्रेल्स में इकोटूरिज्म का अभ्यास किया जाता है।

तितलियाँ जानवरों का एक प्रचुर और विविध समूह हैं और वस्तुतः दुनिया के सभी स्थलीय पारिस्थितिक तंत्रों का एक विशिष्ट हिस्सा हैं। वे लोगों को एक अनोखे तरीके से आकर्षित करते हैं, और लोकप्रिय कल्पना अक्सर तितलियों को कीड़ों से अलग करती है, जैसे कि पूर्व जानवरों का एक पूरी तरह से अलग समूह है। तितलियों का अध्ययन और अवलोकन शायद प्रशतिवादियों के मनोरंजन के रूप में पक्षीविज्ञान के बाद दूसरे स्थान पर है। अधिकांश अन्य कीड़ों के विपरीत, पतंगों सहित—उनके निकटतम रिश्तेदार— तितलियों को संस्कृतियों में आसानी से स्वीकार किया जाता है और सौंदर्यशास्त्र में माना जाता है। वे अकशेरुकीय की वकालत करने वाले एक महत्वपूर्ण प्रमुख समूह हैं, जो स्तनधारियों और पक्षियों के संरक्षण की सार्वजनिक रूप से स्वीकार्य दुनिया और हमारी प्राकृतिक दुनिया पर हावी होने वाले कम विशिष्ट जानवरों के द्रव्यमान के प्रति व्यापक विरोध के बीच एक पुल का निर्माण करते हैं।

सपनों में रख आस्था



सपनों में रख आस्था कर्म तु किए जा,
त्याग से ना डर, आलस परित्याग किए जा,
गलती कर, ना घबरा
गिरकर, फिर हो जा खड़ा
समस्याओं को रास्तों से निकाल दे,
चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे
रख हिम्मत तुफानों से टकराने की
जरूरत नहीं हैं किसी मुसीबत से घबराने की
जो पाना है, बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर
करता रह कर्म मगर, साथ में खुदा की इबादत भी कर
फिर देख तेरी किस्मत क्या क्या रंग दिखलायेगी
तुझको तेरी मंजिल मिल जायेगी, मंजिल मिल जायेगी

सोनाली गहलोत

एम. एस. सी. (उद्यानिकी) फल विज्ञान प्रथम वर्ष

किसान

मिट्टी से मिट्टी होकर, अंधेरे में चिराग जलाता है.....
वह बंजर पड़ी धरती पर हरियाली लहराता है.....
प्रकृति की मार उस किसान को झुका न पाए.....
हजारों कोशिशों के बाद भी मुस्कुराता है.....
मिट्टी से मिट्टी होकर, अंधेरे में चिराग जलाता है.....
कभी बारिश की बौछार तो कभी ओलों की मार.....
कर देती है उसकी दशा बेहाल.....
फिर भी उम्मीद पर उम्मीद, प्रकृति से लगाता है.....
वह मेरे देश का किसान है जो बार-बार खुद को आजमाता है.....
मिट्टी से मिट्टी होकर, अंधेरे में चिराग जलाता है.....



संदीप जिनागल

बी.एस.सी. वानिकी तृतीय वर्ष

मृदा की संपोषणीय व्यवस्था में सूक्ष्मजीवों की उपयोगिता

हेमराज छीपा, अनिल कुमार गुप्ता, राहुल चोपड़ा एवं अशोक कुमार
सहायक आचार्य, उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़

सूक्ष्मजीव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ सूक्ष्मजीव जीवित प्राणियों पर लाभकारी तथा कुछ हानिकारक प्रभाव दिखाते हैं। सूक्ष्मजीवों का माइक्रो मीटर तक का आकार होता है, लेकिन उनकी गतिविधियाँ पारिस्थितिकी तंत्र के एक बड़े क्षेत्र को प्रभावित करती हैं। सूक्ष्मजीव जो विभिन्न बीमारियों का कारण होते हैं उन्हें रोगजनक कहते हैं तथा ये विभिन्न मानव, पौधे और पशु रोगों के लिए जिम्मेदार होते हैं, जो अर्थव्यवस्था और पर्यावरण को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। इसके विपरीत, खाद, कीटनाशक, जैव-सक्रिय यौगिक, प्रोबायोटिक्स, और खाद्य उत्पादन आदि में स्टार्टर कल्चर के रूप में सूक्ष्मजीवों का लाभकारी अनुप्रयोग है। सूक्ष्मजीवों का चिकित्सा, जैव निस्तारण, कृषि और खाद्य उद्योग में उपयोग इनको जीवन की आवश्यक वस्तु बनाते हैं।

सूक्ष्मजीवों ने कृषि के क्षेत्र में, पौधों के विकास को बढ़ावा देने वाले, पोषक तत्व बढ़ाने वाले, कीट के जैविक नियंत्रण में, पौधों में वायवीय एवं अवायवीय तनाव से जुड़े अनुप्रयोगों में व्यापक स्पेक्ट्रम दिखाया है। बैक्टीरिया, कवक, शैवाल और प्रोटोजोआ, मृदा सूक्ष्मजैविक समुदाय के मुख्य घटक हैं जो मिट्टी में खनिज संतुलन बनाए रखने के लिए विभिन्न भू-रासायनिक चक्रों में मदद करते हैं। ये सूक्ष्मजीव सक्रिय रूप से मिट्टी के पोषक घटकों को बेहतर बनाने के लिए क्षरण और खनिज पोषण तंत्र में भाग लेते हैं। इन सूक्ष्मजीवों के विभिन्न प्रकार के अंतर और अंतर संबंध, पौधों की वृत्ति के लिए एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र बनाते हैं। नाइट्रोजन स्थिरीकरण में लेग्युमिनस पौधों के साथ राइजोबियम, पौधों की जड़ों के साथ माइकोराइजा और फस्वस्फेट घुलनशीलता द्वारा मिट्टी में पोषक तत्वों में सुधार में उपयोगी जीवाणु इसके सामान्य उदाहरण हैं। दूसरी तरफ, विभिन्न जीवाणु जैसे, एजोटोबैक्टर, एजोस्फिरिलम, बेसिलस मेगाटेरियम और स्यूडोमोनास भी पुनर्गणनात्मक खनिजों से पोषक तत्वों की मुक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामान्य रूप में, मिट्टी में नाइट्रोजन (N), फोस्फोरस (P) एवं सल्फर (S) जटिल रूप में मौजूद होते हैं और ऐसे पोषक तत्वों को जटिल रूपों से मुक्त करने के लिए मिट्टी के जीवाणु और कवक पर निर्भर होते हैं।

हाल के वर्षों में, फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए विकासशील देशों में रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों का उपयोग बढ़ा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग ने न केवल फसल उत्पादन में सुधार किया, बल्कि मिट्टी के पारिस्थितिकी तंत्र को भी बाधित किया। अवशिष्ट रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों ने जलाशयों के यूट्रोफिकेशन और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को भी



बढ़ाया, जिसने मिट्टी के पारिस्थितिकी तंत्र और पर्यावरण को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। रासायनिक कीटनाशक न केवल लक्षित रोगजनकों को मारते हैं, बल्कि उन अच्छे रोगाणुओं को भी बाधित करते हैं जो मिट्टी की उर्वरकता के लिए फायदेमंद होते हैं। रासायनिक कीटनाशकों के नकारात्मक प्रभाव को फसल कीट और रोगजनकों में बढ़ते प्रतिरोध के रूप में पेश किया गया है। इसलिए, टिकाऊ फसल उत्पादन के लिए मिट्टी के जैविक चक्र को बनाए रखने के लिए जैव आधारित कीटनाशकों और उर्वरकों को बढ़ाने की आवश्यकता है। जैव आधारित उर्वरक और कीटनाशक के प्रयोग से न केवल मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है बल्कि मृदा पारिस्थितिकी तंत्र भी बना रहता

है। पौधे की जड़ें विभिन्न एक्सुडेट्स को स्रावित करती हैं, जैसे कि फ्लेवोनोइड्स, स्ट्रिगोलैक्टोन या टेरपीनोइड्स, जो राइजोस्फीयर में

सूक्ष्मजीवों को आकर्षित करने के लिए संकेत के रूप में और जड़ीय माइक्रोबायोम एवं माइक्रोबियल बातचीत के संचार में सहायक होते हैं। उदाहरण के लिए, नाइट्रोजन स्थिरीकरण में, फ्लेवोनोइड्स मार्ग द्वारा पौधों की जड़ों की ओर राइजोबियम बैक्टीरिया को आकर्षित करने और NOD जीन अभिव्यक्ति प्रणाली को प्रेरित करने का अच्छा प्रभाव दिखाया है। इसी तरह फ्लैवोनश्वइड्स, हाइफल ब्रांचिंग और मायकोराईजा इंटरैक्शन को भी प्रभावित करते हैं तथा फॉस्फेट और नाइट्रोजन के अवशोषण को भी बढ़ाते हैं। सूक्ष्मजीव विभिन्न एंजाइमों को भी मुक्त करते हैं जो कार्बनिक पोषक तत्वों में अकार्बनिक रूपों में शामिल तत्वों की मुक्ति या बातचीत के लिए जिम्मेदार होते हैं। मूल रूप से, सूक्ष्मजीवों ने प्रोटीनेज, यूरीएज, फॉस्फेटेस और सल्फेटेज एंजाइम स्रावित करते हैं जो जटिल अणुओं के क्षरण में शामिल हैं और मिट्टी में उनके सरल रूप को जारी करते हैं और पोषक तत्वों की उपलब्धता में सुधार करते हैं। अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सूक्ष्मजीव मिट्टी की उर्वरता, मिट्टी की संरचना और विभिन्न जैव-जियोकेमिकल चक्रों के संतुलन को बनाए रखने के लिए स्थायी समाधान प्रदान कर सकते हैं।

उस समय की बात



उस समय की बात मुझे याद है आते, तेरे वो रोज के लेसन जिन्हें देख के और मुस्कराकर, बन्द मैं करता तु ले जाती रोज उठा के मुझे कोचिंग पर मुझे रोज वहां कुछ समझ नहीं आता। अब तुने मेरा सारा जीवन पढ़ाई में लिया पर याद ना होता तो मैं पेनल्टी भी देता। पढ़ ले जरा, पढ़ ले ये सारी किताबें आ गई तेरे सिर पर बोर्ड की रातें इन रातों में दुध पीकर सो ही जाता था पर सुबह के पेपर में कुछ भी न आता था तु खाती रोज मुझे चबा-चबाकर पर मैं रोज तेरी यु आरती करता।

भुमिका चन्दचोरिया
बी.एस.सी. वानिकी द्वितीय वर्ष

समाज में युवाओं की भागीदारी

प्रकाश कुमावत

बी. एस. सी. उद्यानिकी द्वितीय वर्ष

भारत का भाग्य और युवा दोनों एक दूसरे के पूरक हैं या हम कह सकते हैं कि समाज का उत्थान एवं विकसित युवा दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। मैं ऐसा इसलिए मानता हूँ क्योंकि किसी भी सोसायटी की प्रगति तब ही संभव है जब उसके विकास में युवा पीढ़ी की रचनात्मक सोच का सहारा शामिल होगा। युवाओं के सपनों में एक नयी ऊर्जा होती है, कार्य करने की क्षमता होती है, आंखों में ओज होता है, तो संकल्प को सिद्धि में चरितार्थ करने की योग्यता होती है, जिसके आधार पर युवा समाज के उत्थान में अपनी एक महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभा सकता है।



भारतीय समाज की एक बड़ी विडम्बना है कि किसी भी क्षेत्र में युथ लीडरशिप को नकार दिया जाता है और मुझे लगता है कि शायद यही वजह है आजादी के 75 वर्ष बाद भी हमारे समाज का एक बहुत बड़ा तबका जो मुलभूत सुख-सुविधाओं से काफी वंचित है। मुझे ये बात बोलने में कतई संकोच नहीं है कि हमारे भारतीय समाज में मेरा वक्तव्य उल्टा साबित होता है यहां युवाओं की सिफारिश और बड़ों का नेतृत्व (उम्रदराज लोग) होता है। खेर! युवाओं को समाज में जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ना चाहिए, निश्चित तौर पर क्षमता और योग्यता ही नेतृत्व करने का आधार बन जाती है।

लेकिन हमारी समाज में युवाओं का कई मोर्चों पर राजनीतिक शोषण भी होता है। राजनीतिक लोग युवाओं का अपने फायदे के लिए दुरुपयोग करते हैं, जो कि लोकतंत्र के स्वच्छ परम्परा नहीं है, इससे शिक्षा के स्तर में कमी आयेगी और युवा अपराध, आतंकवाद, भ्रष्टाचार जैसी गलत प्रवृत्तियों की तरफ अग्रसर होंगे जिससे समाज में अराजकता फैलेगी।

आज के हमारे समाज के लिए युथ नेतृत्व समय की मांग बन चुका है। हम देखते हैं कि कई क्षेत्रों में युवाओं की दुरगामी सोच की कमी की वजह से नकारात्मक परिणाम आते हैं। युवाओं की भागीदारी समाज में संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज आदि के संरक्षण और इसको जीवित रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

आज का युग विज्ञान और टेक्नोलोजी का युग है। युवाओं द्वारा नये-नये आइडिया और विचारों का सृजन किया जा रहा है, जो समाज हित में कारगर साबित हो रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में युवा निश्चित तौर पर अपनी बेहतर से बेहतर प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहा है, किन्तु मुझे लगता है कहीं न कहीं हमारे युथ और पुरानी पीढ़ी (बड़े-बुजुर्गों) के बीच हो रहे वैचारिक टकराव को कम करना बहुत जरूरी है। सामाजिक, आर्थिक या फिर राजनैतिक, हर क्षेत्र में युथ लीडरशिप करना चाहता है, युथ समाज के सर्वांगीण विकास में अपने आपको खपाना चाहता है, लेकिन यह टकराव की स्थिति विकास की गति को घटा देती है, जिससे युवा अपनी सकारात्मक सोच का सही से सदुपयोग नहीं कर पाता है।

मेरा स्वयं का एक वक्तव्य है, जो मुझे नहीं पता आप लोगों के दृष्टिकोण में कितना सार्थक होगा.....

वक्तव्य:— “बड़ों का मार्गदर्शन और युवाओं का नेतृत्व ही समाज का सर्वांगीण विकास और उत्थान कर सकता है” ।

प्रकाश कुमावत

आधुनिक युग के समाज में कमजोर पड़े नेतृत्व के लिए सामर्थ्यवान नेतृत्व की सख्त जरूरत है। आज युवाओं में टकराव के स्थान पर विश्वास, धैर्य, त्याग और प्रेम सद्भाव जैसे गुण विकसित करने चाहिए। आज पूरे समाज में एक ऐसा वातावरण तैयार करने और युवाओं को जीवन के हर क्षेत्र में रचनात्मक बनाए रखने की आवश्यकता है, जिससे कि वे सकारात्मक होकर समाज के विकास में अपनी ऊर्जा लगाएं। आज के दौर में कमजोर पड़ी राजनैतिक इच्छा को एक शक्तिशाली और ऊर्जावान जनइच्छा में बदलने का साहस युथ ही कर सकता है, इसलिए समाज में युथ लीडरशीप बहुत जरूरी है।

MAKE IT GREEN

Lives are crying because it's not clean,
Earth is dying because it's not green...

Earth is our dear Mother, don't pollute it,
She gives us food and shelter, just salute it...

With global warming, it's in danger,
Let's save it by becoming strong ranger...

With dying trees and animals, it's in sorrow,
Make green today and green tomorrow...

With melting snow, one day it will sink,
How can we save it, just think...

Trees are precious, preserve them,
Water is a treasure, reserve it...

Grow more trees, make Mother Earth green,
Reduce pollution and make her a Queen...

Kirti Jangir
B. Sc. (Hons.) Horticulture II Year

समय की महत्ता

अनिल डेवाल

बी.एस.सी. उद्यानिकी द्वितीय वर्ष

1. समय का महत्त्व :

समय हमारी जिन्दगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है तथा इसकी एक खास बात भी है, कि यह एक बार चले जाने पर वापस नहीं आता है, इसलिए आज हमें समय की कीमत को जानना बेहद जरूरी है।

हम सभी को एक दिन में 24 घंटे ही मिलते हैं, लेकिन जिसको इसकी कीमत पता होती है वही बादशाह बनता है अर्थात् अपनी जिन्दगी में कामयाब हो जाता है।

“समय को सम्भालो यदि यह हाथ से फिसल गया तो फिर यह पछतावे के अलावा कुछ नहीं देता”

2. समय बर्बाद होने के कारण :

यदि हम आज के युग में झांक कर देखे तो हमें समय बर्बादी का कारण मिलता है, सोशल मीडिया अर्थात् हम सोशल मीडिया का गलत उपयोग करके हम लक्ष्य से काफी दूर जा रहे हैं और इसका खामयाजा भविष्य में भुगतना पड़ता है।

3. समय की शक्ति :-

समय की शक्ति बहुत ताकतवर होती है। यह शक्ति किसी को राजा तो किसी को नौकर बना सकती है।

कहावत है :

यदि आप समय को बर्बाद करोगे तो एक दिन समय आपको बर्बाद कर देगा।

4. विद्यार्थी जीवन में समय का महत्त्व :-

विद्यार्थी जीवन में समय की बहुत भूमिका होती है। क्योंकि यही से हमारी जिन्दगी मुड़ाव लेती है। यदि हम समय का सही उपयोग करेंगे तो सफल हो जायेंगे वरना असफलता का मुंह देखना पड़ेगा। फिर हमारे पास एक ही शब्द बचता है “काश” अर्थात् काश मैं उस समय वो करता तो आज यह हो जाता.....

इसलिए “काश” शब्द से बचने के लिए हमें हर कार्य के लिए समय निर्धारित करना चाहिए तथा कार्य को समय से पहले या समय पर कर लेना चाहिए ताकि बाकी बचा समय में दूसरे कामों को करने की सारणी बना सकें।

5. समय का सदुपयोग :-

मनुष्य के जीवन में समय का सदुपयोग बहुत मायने रखता है, क्योंकि यह एक बार निकल गया तो फिर यह पछतावे के अलावा कुछ नहीं देता इसलिए समय का सदुपयोग करना सीखें। पल-पल की कीमत को समझे, वरना जैसे कल निकला था वैसे आज निकल जायेगा और आने वाला कल भी ऐसे ही निकल जायेगा तथा ऐसे करते करते दिन निकल जायेगे और एक दिन यह सारी जिन्दगी निकल जायेगी फिर हमारे पछतावे के अलावा कुछ हाथ नहीं लगेगा।

“कोई भी व्यक्ति अपने जन्म से महान नहीं होता बल्कि समय का सदुपयोग करके महान बन जाता है”.....

6. समय किसी का इंतजार नहीं करता :-

समय एक ऐसी चीज है जो कभी किसी के लिये नहीं रुकता, वो हमेशा चलता रहता है अर्थात् हम समय को न तो रोक सकते हैं, और न ही खरीद सकते हैं, इसलिए हम समय को खरीद कर तो नहीं लेकिन समय की कीमत को समझ कर अपनी जिन्दगी में कामयाब हो सकते हैं।

7. समय के अनुसार बदलना सीखें :-

हमें समय के अनुसार बदलते रहना है क्योंकि जो समय के अनुसार बदलता है वो ही एक दिन अपनी जिन्दगी को बदलते हैं।

8. समय के ऊपर किसी ने बहुत अच्छे दोहे लिखे :-

समय के आगे न चले, कभी किसी का जोर!
रचता अपना खेल ये, कभी न करता शोर!!
समय न ठहरा है कभी, बदली कभी न चाल!
जिसके जैसे कर्म है, उसका वैसा हाल!!

9. समय पर अनमोल वचन :-

- (i) जो हमेशा कहे, मेरे पास समय नहीं
असल में वह व्यस्त नहीं बल्कि अस्त-व्यस्त है
स्वामी विवेकानन्द
- (ii) समय दिखता नहीं है पर दिखा बहुत कुछ देता है।
- (iii) नियमित अभ्यास ही आपको सफल बनायेगा।
अनिल डेवाल



10. समय प्रबंधन :-

समय का सही उपयोग करके सफलता को प्राप्त करना

- (i) **सुबह जल्दी उठे :-** सुबह जल्दी उठने से हमारे अन्दर एक ऊर्जा पैदा होती है, जिससे हमारे शरीर में आलस पैदा नहीं होता है। सुबह की शुरुआत सकारात्मक सोच के साथ करें।
- (ii) **मेडिटेशन करें :-** सुबह जल्दी उठते ही मेडिटेशन करें जिससे आपका ध्यान एक जगह केन्द्रित होता है। जिससे दिमाग स्वस्थ रहता है तथा आप दिनभर तनाव रहित रहते हैं।
- (iii) **व्यायाम :-** मेडिटेशन के बाद व्यायाम करें जिससे हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।
- (iv) **मोबाईल का कम उपयोग :-** आजकल हम मोबाईल के आदी हो गये हैं। जो हमें कहीं न कहीं लक्ष्य से भटका रहा है तथा जितना हो सके मोबाईल का उपयोग सही प्रबंधता के साथ करें, एक समय सारणी बनाये और उसमें लिखें कि मुझे इतने बजे से इतने बजे तक मोबाईल चलाना है या सोशल मीडिया पर एक्टिव रहना है, और तो और मोबाईल की बुरी आदत व्यस्कों से बच्चों में भी दिखने लगी है। बच्चे खेलने की उम्र में मोबाईल के आदी हो जाते हैं। जो भविष्य में दिक्कत पैदा करती है।

मोबाईल से कैसे बचे :-

- ज्यादा समय तक मोबाईल का नेट बन्द रखें
 - मोबाईल चलाने का समय निर्धारित करें
 - मोटिवेशनल किताबें पढ़ने की आदत डालें
- (v) **आलस से बचें :-** आजकल दुनिया आलस से भरी पड़ी है। आलस की वजह से हर व्यक्ति का हर काम अधूरा होता जा रहा है। आलस से बचने के लिये सुबह की शुरुआत सकारात्मक सोच व सकारात्मक नजरिये के साथ करें।

“समय की कीमत उस किसान से पुछना,
जिसने फसल बोने से लेकर पकने तक,
दिन रात एक किये हो और एक घन्टे की बारिश ने उसे तबाह कर दिया हो.....”

THE ELECTRICO

Punit Kumar Gupta
B.Sc. (Hons.) Horticulture III Year

सन् 1991 (Los Angeles) The city of California

एक साइंस लेबोरेट्री में प्रयोग हो रहा है। जिसका दृश्य भूतकाल का है। लेबोरेट्री को ब्लेक एंड व्हाइट रूप में दिखाया गया है। राबर्ट जूनियस और राबर्ट मेयर लेबोरेट्री में बाकी सभी वैज्ञानिकों के साथ मिलकर प्रयोग कर रहे हैं।

राबर्ट जूनियस काफी वृद्ध, सनकी, लम्बे, ना ज्यादा मोटे, ना ज्यादा पतले वैज्ञानिक है, जबकि राबर्ट मेयर जवान, लम्बे व पतले वैज्ञानिक है। दोनो वैज्ञानिक एक टेस्ट-ट्यूब में सिल्वर का घोल लेकर उसे एक चुहे में इंजेक्शन के माध्यम से इंजेक्ट कर रहे हैं। सिल्वर घोल इंजेक्ट किये गये चुहे में Electricity उत्पन्न करने पर चुहा मर जाता है।

वर्तमान समय

2009 (लंदन):-

घर का दृश्य:- well-furnished सीन (सुबह का समय)

बेटा-(ल्यूवेन जो 9 साल का है), डाइनिंग टेबल पर बैठा हुआ है, उसके साथ उसकी बहन जैमी भी बैठी हुई है।

ल्यूवेन तेज चिल्लाते हुए बोलता है- माँम ब्रेकफास्ट लगाओ!

माँम- आ रही हूँ बेटा!

ल्यूवेन, जैमी से- हेलो जैमी!

जैमी-(हल्की मुस्कान के साथ) हाय!

माँम (Ms. Margo)- चलो चलो ब्रेकफास्ट करो। स्कूल के लिए देरी हो रही है!

ल्यूवेन और जैमी ने ब्रेकफास्ट कर लिया है।

(ल्यूवेन छोटा, चेहरे पर हल्के-हल्के स्पोर्ट, भुरे बाल व चेहरे का रंग गेरुआ, ब्राइट)

(जैमी- छोटी सी, गालो पर चिक आना)

(Ms. Margo- लम्बी, पतली, जिज्ञासु, गालो पर चिक आना)

अब माँम उन्हें बस में चढ़ाकर हल्की मुस्कान के साथ बाय-बाय करती है।

बस में ल्यूवेन अपने दोस्त डेनियल के साथ और जैमी अपनी दोस्त सार्नी के पास हाय करते हुए बैठ जाते हैं (यह सीन प्रतिदिन होता है)

ल्यूवेन और डेनियल आपस में एक दूसरी लड़की राईनी के बारे में बात करते हैं। (राईनी- छोटी, खुबसुरत, अच्छी)

ल्यूवेन, डेनियल से- राईनी एक बनजम हपतस है ना!

डेनियल- हम्म!

ल्यूवेन- तुम्हें क्या लगता है, वो किसे पसन्द करती हैं ?

डेनियल- वो जॉन के साथ ज्यादा खुश दिखाई देती हैं!

School bus school पहुँच जाती है।

सभी बच्चे अपनी क्लासरूम में चले जाते हैं।

डेनियल और ल्यूवेन भी अपनी क्लासरूम में चले आते हैं।

Miss Ani (Teacher)- उन्हें Science का topic current के बारे में बताती है और पढ़ाती है कि सबसे ज्यादा Electricity सिल्वर की होती है।

क्लास खत्म हो जाती है।

सभी बच्चे स्कूल से बाहर घर की तरफ निकलते हैं।

तब ही जॉन की टीम डेनियल और ल्यूवेन को घर लेती है।

डेनियल हल्की डरी हुई आवाज में जॉन की तरफ देखते हुए बोलता है— हाय जॉन!

जॉन गुस्से में ल्यूवेन को देखता है। तभी राईनी (हल्की मुस्कान लिये हुए) वहाँ आती है और ल्यूवेन को देखती है, और जॉन गुस्से में राईनी के साथ चला जाता है।

डेनियल, ल्यूवेन से— यार! ये जॉन कितना कूल है ना! इसके पापा एक बिजनेस मैन है, और इसके पास इतना पैसा है और राईनी भी इसी को पसन्द करती है।

तभी ल्यूवेन वहाँ से चला जाता है और डेनियल उसे पीछे से आवाज लगाता है।

ल्यूवेन रास्ते से अकेले घर जाता है। तभी मौसम खराब होने लगता है। तेल बारिश और बिजली कड़कती है, और वह एक पेड़ के नीचे खड़ा होकर बिजली को देखता है। घर का दरवाजा खटकता है और ल्यूवेन की माँ दरवाजा खोलती है। ल्यूवेन पूरा बारिश में भीगा हुआ, उसकी माँ उसका सिर पूछती हुए, (डरी हुई फेस में) ल्यूवेन को अन्दर बिस्तर पर लेटा देती है। फिर डॉक्टर को कॉल करती है।

(कुछ देर बाद डॉक्टर का प्रवेश)

डॉक्टर ल्यूवेन के सिर के ऊपर हाथ रखकर व स्थेटोस्कोप से जांचकर Ms. Margo से कहता है— कुछ ज्यादा नहीं हुआ बस बारीश में भीगने के कारण थोड़ा बुखार आया है।

डॉक्टर भी चला जाता है और Ms. Margo भी अपने काम में लग जाती है (अर्थात् रसोई में)

ल्यूवेन (आंख खुली अवस्था में) ऊपर की तरफ देखता रहता है। मानो जैसा की कुछ सोच रहा हो। उसे, राईनी जॉन के साथ खुश रहती है उसके flash backs आते रहते हैं।

अचानक से light off हो जाती है। माँ कुछ ही देर में बंद कसम जलाकर रोशनी लाती है।

सुबह का समय

डेनियल और ल्यूवेन स्कूल से बाहर आते हुए का सीन—

डेनियल, ल्यूवेन से— यार! अगर तुम उसे पसन्द करते हो तो साफ—साफ कह दो ना उसे!

तभी राईनी उसके पास आती है और उससे पुछती है!

राईनी— हाय! आई एम राईनी!

ल्यूवेन — हाय! (लेकिन चेहरे पर हल्का गुस्सा)

तभी जॉन की टीम आ जाती है और ल्यूवेन को धक्का देकर गिरा देती है।

जॉन, ल्यूवेन से— आइन्दा इसके पास दिखा ना तो मुँह तोड़ दुंगा।

और जॉन फिर राईनी को लेकर चला जाता है।

डेनियल नीचे बैठकर ल्यूवेन को संभालता है और ल्यूवेन नर्वस गुस्से में जॉन की तरफ देखता है।

रात का दृश्य

बारीश आ रही है। ल्यूवेन अपनी माँ के साथ रास्ते से पैदल घर की तरफ आ रहा है। (Market road side) तभी अचानक आसमान से एक बिजली बहुत जोरों से कड़कती हुई जमीन को टकराती है।

और कुछ ल्यूवेन की तरफ चली जाती है। ल्यूवेन पीछे की ओर देखता है लेकिन उसे कुछ मालुम नहीं पड़ता है।

घर का दृश्य

माँ और ल्यूवेन घर आ जाते हैं।

माँ जैमी को आवाज लगाती है— जैमी! जैमी!

जैमी सो रही होती है।

ल्यूवेन अपने रूम में चला जाता है और शांत कमरे में कुर्सी पर बैठकर सोच रहा होता है।

Flashback- माँ के साथ आते वक्त की घटना

थोड़ी देर बाद फिर अपने शरीर को चेक करता है, लेकिन उसे कुछ मालूम नहीं पड़ता है।

स्कूल का दृश्य

जॉन क्लासरूम में किसी एक लड़के को तंग कर रहा होता है। (अपने दोस्तों के साथ उसकी खिल्ली उड़ा रहा होता है)

और सामने से डेनियल और ल्यूवेन उसे देखते हुए जा रहे होते हैं। अचानक से जॉन भी गुस्से भरी निगाह से ल्यूवेन को देखता है।

ल्यूवेन ये सब देखकर गुस्से में आ जाता है और डेनियल ल्यूवेन को समझाता है— ल्यूवेन चलो यहां से जॉन सही लड़का नहीं है!

ल्यूवेन और डेनियल रास्ते में जाते हुए

डेनियल, ल्यूवेन से— ल्यूवेन तुम्हें क्या लगता है, राईनी तुम्हें पसन्द करती है!

ल्यूवेन डेनियल से— शायद नहीं!

डेनियल, ल्यूवेन से— कोई बात नहीं यार! चलो तुम मेरे साथ मेरे घर चलो! मेरी माँ कल ही मेरे लिए एक नया विडियो गेम लाई है।

डेनियल, ल्यूवेन को अपने घर ले जाता है।

डेनियल के घर का दृश्य

डेनियल अपनी माँ को आवाज लगाता है— माँ! माँ!

डेनियल की माँ (डेनियल को देखकर)— hey champ! How's your day?

अरे वाह! ल्यूवेन तुम भी आए हो!

चलो चलो जल्दी से बैठो मैं तुम दोनों के लिये नाश्ता लगा देती हूँ!

डेनियल, माँ से— माँ मेरा विडियो गेम कहाँ रखा है!

माँ, डेनियल से— लाती हूँ बेटा!

माँ विडियो गेम देकर नाश्ता तैयार करने चली जाती है।

डेनियल के घर का दृश्य

डेनियल और ल्यूवेन दोनों विडियो गेम खेल रहे थे।

ल्यूवेन अपने मन ही मन में कुछ सोच रहा था, वो रात वाली घटना।

अचानक से विडियो गेम के रिमोट में करंट आता है और रिमोट फ्युज होकर खराब हो जाता है।

कुछ दिन बीत जाने के बाद:—

एक दिन बाजार में—

ल्यूवेन रास्ते से जा रहा है, तभी अचानक से कुछ मोनस्टर (Monster) बाजार में आ जाते हैं। मोनस्टर वहां पर गांडियों की तोड़-फोड़ करते हैं।

(मोनस्टर दूसरे ग्रह से time travel की मदद से आये हैं, जो कि ल्यूवेन को मारने आये हैं)

एक बात और ल्यूवेन के असली मां-बाप दूसरे ग्रह में रहते हैं। अब बात यहां ये आती है, कि अभी ल्यूवेन की जो माँ है वो महिला कौन है और ल्यूवेन किनका बेटा है। इस तरह इस कहापी का फेज—I पूरा होता है।

जब मोनस्टर ल्यूवेन पर हमला करते हैं तो अचानक से ल्यूवेन में electricity की power आ जाती है जिसकी मदद से वह मोनस्टर को हरा देता है।

लेकिन कहानी के अंत में ल्यूवेन को ये समझ नहीं आता कि actually में वो मोनस्टर उसे मारने क्यों आया, और वो पृथ्वी पर कौनसे ग्रह से आये हैं।

फेज-I completed

WOMEN

W..... Wonderful Mother
O..... Outstanding Friend
M..... Marvelous Daughter
A..... Adorable Sister
N..... Nicest gift to men from God

Women changes her name
Changes her home
Changes her family
Moves in with you
Builds a home with you
Gets pregnant for you

Almost girls up in the labour room due to the unbearable pain of child birth, even the kids she delivers bear your name till the day she dies....

Everything she does can be relied, maintaining all family relations, everything that benefit you....

Sometimes at the cost of her own health, hobbies, and beauty....

“Being a woman is priceless”

So respect them



Pankaj Badhaliya
B.Sc.(Hons.) Forestry III Year

College Life

Stepping into a new life where one faces oneself
Some consider everything a race and chase them all.
While others find it difficult to even tie their shoe laces.
Many hire care for you, but you care for a selected few.

Lots of leisure,
Lots of pressure

In the midst of which some for treasure.

The greatest invention being the headset without which no one's heads are fit
more sleep, less work but still felling tired, every other minute.

Sudden decisions rare output
Even don't care for taking next
More dance, more wishes
Marry and exam and test.

Suddenly when you look book

The posters says 'The End'

The 8760 hours of this four years are just like a 3 hours of a movie passing by
in the snap of your fingers.

Learning behind many a memory that lingus



Pankaj Badhaliya
B.Sc. (Hons.) Forestry III Year

मेरा बचपन

मेरा बचपन बहुत प्यारा था,
मेरे घर के सभी सदस्य मुझे बेहद स्नेह किया करते है,
मुझे सभी अपनी गोद में लेकर घुमाया करते थे,
कोई मेरे साथ खेलता था,
तो कोई मुझे हंसाता था,
कोई मुझे अपने साथ, खाना खिलाया करता था,
तो कोई मुझे आसमान में, तारे दिखाया करता था,
पर जब मेरी मम्मी मुझे गोद में लेती थी, तो मैं बहुत प्रसन्न हुआ करती थी,
तो मम्मी के चेहरे पर हंसी खिल उठती मुझे देखकर
जब मैं सुबह सो कर उठती तब मम्मी मेरी आवाज सुनकर
अपना काम छोड़ के दौड़ी चली आती थी,
जब भी मम्मी खाना खाने बैठती,
तब मैं भी उनके पास जाकर बैठ जाती,
और मैं बोलती कि मम्मी मुझे भी खिलाओ,
तब मम्मी पहले मुझे खाना खिलाती,
फिर बाद में खुद खाती,
सच में एक माँ और बेटी का रिश्ता बड़ा ही प्यारा है,
आज भी बचपन के दिन बहुत याद आते है।

नेहा तेतरवाल
बी.एस.सी. उद्यानिकी तृतीय वर्ष



आँख की खिड़किया

आँख की खिड़किया खुली होगी
दिल में जब चोरीया हुई होगी
या कहीं आईने गिरे होंगे
या कहीं लड़किया हंसी होगी
या कहीं दिन निकल रहा होगा
या कहीं बस्तियां जली होगी
या कहीं हाथ हथकड़ी में कैद
या कहीं चूड़ियाँ पड़ी होगी
लौट आयेँगे शहर से भाई
हाथ में राखीया बंधी होगी
उन दिनों कोई मर गया होगा
जिन दिनों शादियाँ हुई होगी

राजदीप कानव

बी.एस. सी. वानिकी तृतीय वर्ष



चाहते

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से
अंदर मेरे ये कैसा शोर है,
हंसा मुझ पर फिर बोला,
चाहते तेरी कुछ और थी,
पर तेरा रास्ता कुछ और है,
रूह को संभालना था तुझे,
पर सुरत सँवारने पर तेरा जोर है,
खुला आसमान, चाँद-तारे चाहत है तेरी,
पर बन्द दिवारों को सजाने पर तेरा जोर है,
सपने देखता है खुली फिजाओं के,
पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है।

पंकज

बी.एस. सी. वानिकी तृतीय वर्ष

आज का किसान

आज का किसान
जिंदगी काट रहा है किसान खेती से,
घर का खर्च तक अब खेती से चलता नहीं।
साल – भर करे मेहनत, उगाता है दाना,
ऐसी कमाई क्या, जो बिकता बाहर रुपया पर मिलता चार आना।
खाद –बीज सब है महंगे, कहाँ से लाए रुपया।
कर्ज उठाता है, नहीं चुका पाता ब्याज।
बहुत गीत बने, बहुत लेख छपे, कि किसान है महान,
पर दुर्दशा न देखी किसी ने, ऐसा है किसान।
आज आत्महत्या करने चला है किसान,
बचा सको तो, बचा लो।
कर्ज मे डूबा है किसान,
फिर ना कहना, मेरा देश महान।

अशोक कुमार
बी.एस. सी. उद्यानिकी चतुर्थ वर्ष



हे कृषक!

हे कृषक!
तुम्हारे कंचुओं को
काट रहे हैं- "केकड़े"
सावधान!
ग्रामीण योजनाओं के "गोजरे"
चिपक रहे हैं-
गाँधी के 'अंतिम गले'
सावधान!
विकास के 'बिच्छुएँ'
डंक मार रहे हैं- 'पैरों तले'
सावधान!
श्रमिक!
विश्राम के बिस्तर पर मत सोना
डस रहे हैं- "साँप"
सावधान!
हे कृषक!
सुख की छाती पर
गिर रही हैं- "छिपकलियाँ"
सावधान!
श्रम के रस
चुस रहे हैं - "भौरें"
सावधान!
फिलहाल बदलाव में
बदल रहे हैं- "गिरगिट नेतागण"
सावधान!

अलका कुमावत
एम. एस. सी. (उद्यानिकी)
सब्जी विज्ञान प्रथम वर्ष

फॉरेस्ट और मैं

एक दिन जब मैं forest में थी.....
मुझे लगा वो मुझे अपने प्यार की कहानी सुनाने लगा.....
पतझड़ के मौसम में वो पत्तियां ऐसे गिर रही थी....
मानों वो धरती के प्यार में गिर रही हो..

उस जंगली हवा को जब महसूस किया था.....
तब मैंने अपने आप को खो दिया.....
बस मेरी आत्मा को महसूस किया.....
जो कहीं खो चुकी थी.....

जब उस फॉरेस्ट की गहराई में देखा.....
वहां असली जिंदगी थी, सुकून था, सचमुच का जादू मानों fairy tales की दुनिया हो.....
वितमेज से मैंने unconditional प्यार करना सिखा.....
जैसे एक मां करती है.....



मैं उस forest की आत्मा में खो ही गई थी कि....
मुझे एक आवाज सुनाई दी..... "ये सब खो जायेगा"
क्या सच में forest खत्म हो जायेगा?????
महसूस हुआ कि जैसे... कुछ घुट रहा है.....

"मेरी आत्मा पूछने लगी.....
"मैंने क्यों अपने आप को इस जंगल में खो दिया???
क्या मेरी आत्मा इससे जुड़ी हुई है???"

जब वितमेज मुझे इतना प्यार दे रहा है तो मैं उन्हें नफरत नहीं दे सकती.....
अहसास हुआ जैसे..... मेरी जिंदगी खो रही है.....
कहीं मैं जीना न छोड़ दूं.....

"जब ये जंगल धिरे-धिरे कट रहे हैं.....
तब क्यों मैं अपने आप को खत्म होता हुआ महसूस कर रही हूँ.....
ये कटते जंगल मुझसे अक्सर एक सवाल करते हैं कि उनकी गलती क्या है??
और मैं चुप क्यों हूँ????.....????.....???"



नीशा कुमारी

बी.एस.सी. वानिकी द्वितीय वर्ष

जामुन के औषधीय गुण, महत्व और उपयोग

मोनिका कुमारी मीना¹ एवं अनिल कुमार यादव²

¹उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़

²उद्यान विभाग, जीवन विज्ञान विद्यापीठ, सिक्किम वि. विद्यालय, गैंगटोक, सिक्किम

जामुन का वानस्पतिक नाम— सिजीजियम क्यूमिनी है। यह मिरटेसी कुल का पौधा है, इसका उत्पत्ति स्थान भारत है। जामुन के पौधे में काले रंग के फल लगते हैं, जो खाने में बहुत ही स्वादिष्ट होते हैं। साथ ही पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। जामुन को एक औषधीय पौधा माना जाता है और इसके पौधे के सभी भागों को औषधीय रूप में उपयोग किया जाता है। जामुन के पौधे की ऊंचाई औसतन 15-25 फीट तक रहती है, उसके फल खाने में बहुत स्वादिष्ट होते हैं तथा दिखने में काफी चमकदार होते हैं। जामुन का फल बहुत फायदेमंद रहता है, यह मधुमेह रोगियों के लिए रामबाण औषधी के रूप में साबित हुआ है। जामुन के औषधीय गुणों से लोग ज्यादा परिचित नहीं हैं इसलिए इसका ज्यादा उपयोग नहीं कर पाते हैं।

जामुन फल का उपयोग पेट दर्द, पेचिस, डायबिटीज, गठिया और पाचन संबंधी बहुत सी समस्याओं को ठीक करने में बहुत काम आता है तथा डायबिटीज/मधुमेह रोगियों के लिए तो जामुन रामबाण का काम करता है।

जामुन पोषक तत्वों से भरपूर फल है इसमें एंटीऑक्सीडेंट, फास्फोरस, कैल्शियम और फ्लेवोनोइड प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। साथ ही हमारे शरीर के लिए आवश्यक दूसरे पोषक तत्व भी शामिल हैं, जैसे फाइबर, वसा, सोडियम, प्रोटीन, फोलीक अम्ल, राइबोफ्लेविन, थायमिन, कैरोटीन आदि।

इसके औषधीय गुण प्राचीन काल में भी प्रचलित थे तब से ही आयुर्वेदिक उपचारों में इसका बहुत उपयोग किया जा रहा है।

1. हिमोग्लोबिन स्तर बढ़ाने में उपयोगी:- जामुन का फल विटामिन सी और आयरन की मात्रा से भरपूर होता है, जो हमारे शरीर में हिमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाने में काफी मददगार साबित होता है। इसमें मौजूद आपस ब्लड प्यूरीफायर का काम करता है, जिससे शरीर में हिमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ने से ऑक्सीजन की वहन करने की क्षमता भी बढ़ जाती है। जामुन खाने से शरीर में खून की कमी नहीं होती और हम इससे स्वस्थ रहते हैं।



2. मधुमेह से छुटकारा दिलाने में मददगार:- जामुन में कैलोरी की मात्रा कम होती है। इसलिए मधुमेह रोगियों के लिए इसका सेवन सुरक्षित माना जाता है। इसके बीज में जम्बोलिन कम्पाउंड पाया जाता है जिसमें एंटीडायबेटिक गुण होते हैं। जिससे यह शुगर लेवल को कम करता है तथा कम करने में मदद करता है। साथ ही इन्सुलिन सेन्सिटिविटी बढ़ाता है। मधुमेह या शुगर के ईलाज के लिए जामुन की गुठली से बने चूर्ण का प्रयोग किया जाता है। जो बहुत फायदेमंद होता है। जामुन के बीज को सुखाकर पाउडर बना लें, इस पाउडर को दिन में 3 बार लेना चाहिए जिससे यह मधुमेह रोगियों को बार-बार पेशाब आना या प्यास लगने वाली समस्या को कम करने में मदद करता है। जामुन के फल के अलावा जामुन के पेड़ की छाल और पत्तियां भी मधुमेह रोगियों के लिए उपयोगी होती हैं।

3. दिल को स्वस्थ रखता है/हृदय को स्वस्थ रखने में उपयोगी:- जामुन एंटीऑक्सीडेंट और पोटेशियम जैसे मिनरल्स से भरपूर होता है, यह पोषक तत्व हमारे दिल को स्वस्थ रखने और हृदय संबंधी बीमारियों को रोकने में महत्वपूर्ण है। हाई ब्लड प्रेशर, दिल से जुड़ी कई बीमारियां और हार्ट स्ट्रोक जैसी समस्याओं से बचने में जामुन का फल बहुत उपयोगी है।

4. त्वचा के लिए जामुन की छाल का उपयोग :- त्वचा संबंधी रोगों के लिए जामुन की छाल का भी प्रयोग किया जा सकता है, जामुन की छाल में रक्तशोधक का गुण रहता है, जो रक्त को शुद्ध करता है। जिससे हमारी त्वचा अच्छी दिखने लग जाती है। जामुन में एस्ट्रिजेंट के गुण पाये जाते हैं जो हमारी त्वचा को खुबसुरत बनाते हैं।

5. वजन घटाने में उपयोगी :- जामुन में प्रचुर मात्रा में फाइबर पाया जाता है। इसमें कैलोरी की मात्रा कम होती है। इसमें विटामिन सी, आयरन, फास्फोरस, मैग्निशियम और फोलिक एसिड भी पाया जाता है जो शरीर को स्वस्थ रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। इसलिए जामुन को वजन घटाने के लिए एक बेहतरीन फल माना जाता है। इसके अलावा प्रचुर मात्रा में फाइबर होने की वजह से जामुन पाचन के लिए भी बहुत अच्छा माना जाता है। यही नहीं जामुन शरीर में वाटर रिटेंशन को भी कम करता है।

6. लीवर की बीमारी में जामुन का उपयोग :- लीवर की बीमारी में भी जामुन का उपयोग फायदेमंद माना गया है। जामुन के सिरके का रस पीने से बढ़े हुए लीवर की बीमारी में फायदा मिलता है।

7. वेतप्रदर की समस्या के लिए जामुन की गुठली का प्रयोग :- वेतप्रदर की समस्या बहुत बड़ी है। यह महिलाओं में विशेष कर पायी जाती है। इसकी समस्या से छुटकारा पाने के लिए जामुन की गुठली का पाउडर एवं आंवला का पाउडर मिलाकर मिश्री के साथ सेवन करने से फायदा मिलता है।

8. मुंह के छालों में जामुन के पत्तों का प्रयोग :- जामुन के पत्तों के रस से कुल्ला करने से मुंह के छालों में काफी आराम मिलता है। जामुन के फल को प्रतिदिन खाने से गले से संबंधित रोग ठीक हो जाते हैं। जामुन के पत्तों को उबालकर कुल्ला करने से भी फायदा मिलता है।

9. गैस्ट्रिक समस्या में सुधार :- जामुन में डाइयुरेटिक गुण होते हैं, जो पाचन संबंधी समस्याओं को कम करने में उपयोग है ऐसा इसलिए है क्योंकि यह हमारे गुर्दे से टॉक्सिन्स को बाहर निकालता है और उल्टी को रोकने में मदद करता है। जामुन में उच्च मात्रा में फाइबर पाया जाता है जो पाचन में सुधार करता है।

10. मोतिया बिंद में जामुन का प्रयोग :- मोतिया बिंद में जामुन की गुठली को पीसकर इसका पाउडर बना लेते हैं तथा जामुन का पाउडर और आंवले के पाउडर को बराबर मात्रा में शहद के साथ लेना चाहिए। इसके सेवन से आंखों की रोशनी बढ़ती है तथा मोतिया बिंद की समस्या दूर होती है।

पहचान

उड़ान भरों ऐसी की धरती को आसमां से मिला दो.....

मेहनत की आग में खुद को जला दो.....

तूफानों की कतियों को अपने हौसलों से हिला दो.....

करेगी सलाम तुमको ये दुनिया सारी.....

अपने नाम की इतनी पहचान बना दो.....

संदीप जिनागल
बी.एस.सी. वानिकी तृतीय वर्ष

नीम है एक वरदान

योगेन्द्र कुमार शर्मा, हेमराज छीपा, राजपाल वर्मा एवं राम राज कड़वासरा
उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़

नीम का वृक्ष मानव जाति के लिए प्रकृति की अनुपम भेंट है इस वृक्ष के प्रत्येक भाग का प्राचीन काल से विभिन्न प्रकार की औषधीय उपयोग में किया जा रहा है। नीम की उत्पत्ति संस्कृत के शब्द निम्बा से हुई है, जिसका अर्थ ही बीमारी से निजात पाना है। भारत में प्राचीन ग्रन्थ, वेद, पुराण, संहिता आदि में नीम का वर्णन मिलता है। नीम बहुपयोगी होने के कारण इसे अद्भुत वृक्ष की संज्ञा दी जाती है। अखिल भारत वर्ष में सामाजिक वानिकी के रूप में नीम के पौधे लगाये जाते हैं। नीम का औषधीय महत्व होने के साथ-साथ इसका "जैविक खेती" में वर्तमान में इसका व्यापक उपयोग हो रहा है।

नीम है औषधीय गुणों से भरपूर:- नीम में जीवाणुनाशक गुण पाया जाता है। इसकी निम्बोली में 40-50 प्रतिशत तेल की मात्रा तथा 0.3-0.35 प्रतिशत अजाडिरेक्टिन नामक एल्केलायड पाया जाता है। इसके प्रत्येक भाग पत्ती, फूल, फल, तना का उपयोग विभिन्न प्रकार के रोग को दूर करने के लिये किया जाता है। जैसे रक्ताल्पता, पीलिया, हृदयरोग, कैंसर एवं चर्मरोग आदि बिमारीयों में नीम के उपयोग से निजात मिलती है।

नीम का दैनिक जीवन में महत्व:- नीम के पत्ते पानी में उबालकर नहाने से खाज-खुजली में राहत मिलती है। इसके पत्ते व छाल का रस त्वचा पर लगाने से फोड़े-फुन्सी से निजात मिलती है। इसकी नयी कोपले एवं पत्तियों के रस का सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल में कमी आती है। नीम से सौन्दर्य प्रसाधन- साबुन, शैम्पू, फेसवॉश, फेसपेक आदि तैयार उत्पाद उपयोग में लाये जाते हैं।

नीम का जैविक खेती में है महत्व:- इसमें पाये जाने वाले रसायनों से विभिन्न प्रकार के कीटनाशक जैसे नीमरिच, नीमकेक, नीमेक्स, नीमगार्ड, निम्बा आदि तैयार किये जाते हैं। इसके जैविक उत्पाद पर्यावरण सम्मत होने के कारण खेती में उपयोग किये जाते हैं। जिससे प्रकृति एवं मानव जीवन को रसायनिक दुष्परिणाम से बचाव होता है। इसके जैविक उत्पाद के फसल पर उपयोग करने से विभिन्न कीट एवं व्याधियों का नियंत्रण होता है।

नीम का पेड़ है बाल मनुहर:- नीम एक बहुउपयोगी वृक्ष है। इसीलिए इसको 21 वीं सदी का वृक्ष कहा जाता है। गर्मी के मौसम में नीम के पेड़ की शीतल छांव में आराम मिलता है, इससे हमारा शरीर तरो ताजा महसूस करता है। बच्चे इसकी डाली पर खेल-कुद करते हैं। इसकी पकी हुई निम्बोली खाने में स्वादिष्ट लगती है।



घाट घाट को पिए पाणी अर घट घट गी राख सोच,
बो मिनख मानुश न के जान जो कदी ना कर आलोच

संदीप जिनागल
बी.एस.सी. वानिकी तृतीय वर्ष

महाविद्यालय के बगीचे के फल



सामान्य नाम: सन्तरा
वानस्पतिक नाम- सिट्रस रेटिकुलेटा
कुल-रूटेसी



सामान्य नाम: अमरुद
वानस्पतिक नाम- सिडियम ग्वाजावा
कुल- मिर्टेसी



सामान्य नाम: आम
वानस्पतिक नाम- मैजीफेरा इण्डिका
कुल- एनाकार्डिएसी



सामान्य नाम: अनार
वानस्पतिक नाम- पुनिका ग्रेनेटम
कुल- पुनिकेसी



सामान्य नाम: करौंदा
वानस्पतिक नाम- कैरेसा कैरेन्डस
कुल- एपोसाइनेसी



सामान्य नाम: शरीफा
वानस्पतिक नाम- एन्नोना स्क्वीमोसा
कुल- एनोनेसी



सामान्य नाम: इमली,
वानस्पतिक नाम- टेमेरिन्डस इण्डिका, कुल- फैबेसी



सामान्य नाम: कागजी नींबू,
वानस्पतिक नाम- सिट्रस आरेण्टीफोलिया, कुल- रूटेसी



सामान्य नाम: पपीता,
वानस्पतिक नाम- कैरीका पपाया,
कुल- कैरिकेसी



सामान्य नाम: लसोडा,
वानस्पतिक नाम- कार्डिया डाइकोटोमा,
कुल- बोरजिनेसी



सामान्य नाम: खिरनी,
वानस्पतिक नाम- मैन्डिलकारा हेक्जेंडा,
कुल- सैपोटेसी



सामान्य नाम: जामुन,
वानस्पतिक नाम-सिजियम क्युमिनी,
कुल- मिटेसी



सामान्य नाम: माल्टा,
वानस्पतिक नाम- सिट्रस साइनेसिस,
कुल- रूटेसी



सामान्य नाम: बेल,
वानस्पतिक नाम- एगल मार्मेलोस
कुल- रूटेसी

छाया चित्रण:

डॉ. जितेन्द्र सिंह, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, फल विज्ञान विभाग
डॉ. प्रेरक भटनागर, सह आचार्य, फल विज्ञान विभाग
श्री लाधूराम, सहायक आचार्य, पादप रोग विज्ञान
श्री योगेन्द्र कुमार शर्मा, तकनीकी सहायक
उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, इनालावाड

Events and Celebrations



महाविद्यालय में पौधरोपण कार्यक्रम 15, अगस्त 2021



महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती 2 अक्टुबर, 2021



संविधान दिवस 26 नवंबर, 2021



कैडेड्स प्रशिक्षण शिविर 06-12 सितम्बर, 2021



भगतसिंह जयंती 28 सितम्बर, 2021



एन.सी.सी.दिवस 28 नवम्बर, 2021



राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष केम्प 22-28 जनवरी, 2022



73 वां गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2022



राष्ट्रीय मतदाता दिवस 25 जनवरी, 2022



विज्ञान साहित्यिक मेला 14-16 फरवरी, 2022



उद्यानिकी के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक भ्रमण
का आयोजन 23-31 मार्च, 2022



वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह 19 मई, 2022



विश्व तम्बाकू निषेध दिवस: 31 मई, 2022



साइबर जागरूकता दिवस 01 जून, 2022



वानिकी के विद्यार्थियों के लिये शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन 1-09 जून, 2022



विश्व साइकिल दिवस: 03 जून, 2022



विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून, 2022



विश्व योग दिवस: 21 जून, 2022



पौधारोपण कार्यक्रम 14 जुलाई एवं 01 अगस्त, 2022



76वां स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त, 2022



छात्रसंघ चुनाव 26 अगस्त, 2022



वाद विवाद प्रतियोगिता 6 सितम्बर, 2022



महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंति 02 अक्टूबर, 2022



राष्ट्रीय एकता दिवस 31 अक्टूबर, 2022



सांस्कृतिक सप्ताह 10-12 अक्टूबर, 2022



तीसरा अन्तरमहाविद्यालय खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता 14-16 नवम्बर 2022



संविधान दिवस 26 नवम्बर, 2022



रक्तदान शिविर 27 नवम्बर, 2022



एन.सी.सी. दिवस 27 नवम्बर, 2022



स्वच्छ भारत पखवाड़ा 08 अक्टूबर, 2022

Workshop, Seminar and Training



TSP Training on cultivation techniques of fruit crops at KVK Pratapgarh on 16 February, 2022



TSP Training on cultivation techniques of fruit crops at KVK Pratapgarh on 17 February, 2022



Farmers Training on Production Technology for under-utilized fruits on 26 February, 2022



Online National Workshop on Hydroponic Cultivation on 28-29 March, 2022



औषधीय पौधों की खेती प्रक्रिया एवं विपणन 12 सितम्बर, 2022



उद्योग जागरूकता कार्यक्रम 25 नवम्बर, 2022

3rd Inter-College Sports and Cultural Events (14-16 November, 2022 at CH&F, Jhalawar)



Glimpse of Educational Tour B.Sc. Horticulture and Forestry IV Year Students



Visit of Dignatries

Dr. T.A. More, Former Vice Chancellor MPKV, Rahuri
 Dr. B. Mohan Kumar, Vice Chancellor, Arunachal
 University of Studies
 Dr. C.R. Anand Kumar, Former Registrar, TANU
 Dr. Kamal Sharma, Dean, COH&F, Hamirpur
 Dr. Nidhi Verma, Principal Scientist ICAR
 visited campus for College Accriditation on 07
 September, 2021



Prof. A.K. Gahlot, Ex HVC, Rajasthan University of
 Veterinary & Animal Sciences, Bikaner
 Prof. N.C. Patel, Ex HVC Anand Agriculture University,
 Prof S.R. Maloo, Ex-Dean RCA Udaipur and
 Prof. L.K. Dashora Former Dean, CH&F, Jhalawar
 Dr. D.C. Joshi, HVC, Agriculture University Kota on 15
 March 2022 for Hi-Power Committee visit

Dr. Abhay Kumar Vyas, HVC, Agriculture University,
 Kota visited campus on 14 November, 2022 during 3rd
 Inter College games-sports and cultural events
 inauguration



Sh. Mahadeo Singh Khandela, Chairman, Rajasthan
 Kissan Aayog
 Dr. G. L. Keshwa, Former HVC, Agriculture University
 Kota visited on 17 November, 2022 during Rajasthan
 Kisaan Aayog meeting at Jhalawar



Citation: Baag-Van (2022), College of Horticulture and Forestry,
Jhalawar (Agriculture University, Kota) Publication Pp.1-34